पाठ-20

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा

– शंकर बाम

आइए सीखें

■ साहस, शौर्य तथा स्वाभिमान जैसे गुण ■ सहायक-क्रिया ■ वाक्य के गुण।

पात्र-परिचय

चेन्नम्मा	:	**कित्तूर की रानी**
सिद्दप्पा	:	**चेन्नम्मा का सेना नायक**
शेट्टी	:	**चेन्नम्मा का एक और सेनानायक**
मल्लप्पा शेट्टी	:	**अंग्रेजों से मिला हुआ कित्तूर का दीवान**
थेकरे और चैपलिन	:	**अंग्रेजों के सेनानायक**

पहला दृश्य

[कित्तूर का दरबार। कित्तूर राज्य को अंग्रेज़ों द्वारा हड़पने की अफवाह सुनकर चिंतित रानी सेनापति से बातें कर रही हैं। तभी दरबान का प्रवेश होता है।]

दरबान : (झुककर) महारानी जी की जय हो!

चेन्नम्मा : क्या समाचार लाए हो, दरबान?

दरबान : महारानी जी, मल्लप्पा शेट्टी कंपनी सरकार के दूत बनकर आए हैं। बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं।

चेन्नम्मा : उन्हें ससम्मान दरबार में ले आओ।

दरबान : जो आज्ञा, महारानी जी।

(दरबान जाता है। मल्लप्पा शेट्टी का दरबार में प्रवेश)

शिक्षण संकेत

▸ एकांकी के संवादों को हाव-भाव सहित व्यक्त करें ▸ छात्रों से भी अनुकरण कराएँ ▸ अन्य वीरांगनाओं के प्रसंग सुनाएँ ▸ स्वतंत्रता का महत्व समझाएँ।

मल्लप्पा : महारानी की जय हो!

चेन्नम्मा : (व्यंग्य से) कम्पनी सरकार की भी तो जय कहिए!
(रुककर) बोलिए न शेट्टी जी, अंग्रेज़ी सरकार की जय बोलिए। कहिए, कैसे आना हुआ?

मल्लप्पा : कम्पनी सरकार ने यह फ़रमान देकर मुझे आपके पास भेजा है। (फ़रमान देने लगता है।)

चेन्नम्मा : नहीं, नहीं, आप मुझे न दीजिए। आप ही पढ़कर सुनाएँ तो बेहतर रहेगा।

मल्लप्पा : (फ़रमान पढ़ता है) कम्पनी सरकार आपके गोद लिए हुए बालक को गद्दी का उत्तराधिकारी नहीं मानती। इसलिए वह कित्तूर राज्य को अपने अधिकार में लेने की घोषणा करती है। साथ ही हम यह भी बता देना चाहते हैं कि राज्य में किसी तरह की गड़बड़ी न फैले। इसकी पूरी ज़िम्मेदारी आप पर होगी।
(रानी क्रोध से आग-बबूला हो जाती है। अपने सिंहासन से उठकर वह मल्लप्पा के हाथ से फ़रमान छीन लेती हैं फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर उस पर फेंक देती है।)

चेन्नम्मा : (क्रोध से) फ़रमान का यह उत्तर कम्पनी सरकार को दे देना! अंग्रेजों ने समझा होगा कि एक असहाय नारी को डरा-धमका कर उसका राज्य छीन लेंगे, उसे मिट्टी में मिला देंगे। यह उनकी सरासर भूल है। नारी को वे दुर्बल तो समझते हैं, किन्तु वे यह नहीं जानते कि समय आने पर वह प्रलय भी कर सकती है।

सिद्दप्पा : हाँ दूत, बिलकुल यही संदेश अपने मालिक को देना। हम सब युद्ध के लिए तैयार हैं। अंग्रेजों की राज्य हड़पने की कुटिल नीति का हमें डटकर विरोध करना होगा।
(व्यंग्य से) किन्तु दीवान जी! आपको कितना हिस्सा मिलने वाला है?

मल्लप्पा : (झल्लाकर) इससे आपको मतलब? अब मेरा कित्तूर से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

चेन्नम्मा : शर्म नहीं आई तुम्हें यह कहते हुए, मल्लप्पा। जीवन-भर जिसका तुमने नमक खाया, स्वार्थ में पड़कर उसी का गला काट रहे हो? लालच में आदमी कितना अंधा और नीच बन जाता है, तुम इसके जीते-जागते उदाहरण हो, किन्तु याद रखो, जो अपने देश को धोखा देता है, उसके साथ गद्दारी करता है; ईश्वर उसे कभी क्षमा नहीं करता।

सिद्दप्पा : (मल्लप्पा से) हमने तो सुना है कि सरकार कित्तूर की गद्दी आप ही को सौंप रही है।

चेन्नम्मा : (क्रोध से) यदि इस जैसे घर के भेदिए, शत्रु से मिल जाएँ तो यही होगा। जिस थाली में खाना उसी में छेद करना! महाराज की मृत्यु होते ही इन्हें पर लग गए। जब तक वे जीवित रहे, कोई भी कित्तूर की ओर आँख उठाने का साहस नहीं कर सका, किन्तु मल्लप्पा! मेरे जीवित रहते तुम्हें भी यह गद्दी नहीं मिलेगी। मुझे अंग्रेजों को सबक सिखाना ही होगा। मल्लप्पा! अब तुम जा सकते हो।
(मल्लप्पा क्रोध से पैर पटकता हुआ दरबार से बाहर चला जाता है।)

चेन्नम्मा : (धीरे से) हमने कम्पनी सरकार को दो टूक उत्तर दे दिया। अब हमें लड़ने के लिए तैयार रहना होगा। दास बनकर जीवन बिताने से लड़कर मर जाना कहीं अच्छा है। अब आप लोग अपना सुझाव दें।

सिद्दप्पा : आपका फैसला हमें स्वीकार है। यह ज्ञात होते हुए कि अंग्रेजों को चुनौती देना साँप की बाँबी में जान-बूझकर हाथ डालना है, हमें उनसे दो-दो हाथ करने ही होंगे। उन्हें भारतीयों की शक्ति का पता तो चलना ही चाहिए, अन्यथा वे जीना हराम कर देंगे। इसी प्रकार वे सभी राज्यों को हड़प लेंगे।

चेन्नम्मा : बिलकुल सत्य कहा आपने, सिद्दप्पाजी! हमें कम्पनी को बताना ही होगा कि हम अपने राज्य में किसी विदेशी का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे।

रायण्णा : रही लड़ाई की तैयारी की बात, सो हम पूरी तरह तैयार हैं। हमें शत्रु के दाँत खट्टे करना आता है। राज्य के गोदामों में इतना अन्न भरा है कि वर्षों समाप्त नहीं होगा। बारूद इतना है कि तोपें पिघल जाएँगी, पर बारूद समाप्त नहीं होगा। सरोवरों में इतना जल भरा है कि शत्रु...

चेन्नम्मा : अब मैं चिंतित नहीं हूँ। मुझे विश्वास है कि हम शत्रु की कमर तोड़ देंगे। हमारी पराजय नहीं होगी। हमारे राज्य का प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति लड़ने के लिए तत्पर है। केवल अवसर की प्रतीक्षा है।

सिद्दप्पा : हमें अभी से तैयारी प्रारम्भ कर देना चाहिए। अंग्रेजों का मुकाबला करने के लिए हमें दिन-रात एक करना पड़ेगा। हमें मल्लप्पा को भी मज़ा चखाना है।

रायण्णा : बिलकुल ठीक, मेरा तो मन है कि मल्लप्पा और थेकरे दोनों का सिर काटकर किले के बुर्ज़ पर लटका दूँ, जिससे लोगों को गद्दारी के अंजाम का पता चले।

(सभी चले जाते हैं।)

(दूसरा दृश्य)

(मल्लप्पा ने धाखाड़, पहुँचकर थेकरे को रानी का संदेश कह सुनाया। सुनते ही थेकरे जलभुन गया। पाँच सौ सिपाही लेकर उसने कित्तूर पर आक्रमण कर दिया।)

थेकरे : (किले का फाटक बंद देखकर) कित्तूर के सिपाहियों! एक बार फिर कान खोल कर सुन लो। मैं आप लोगों को बीस मिनिट का समय देता हूँ। यदि फिर भी आप लोगों ने फाटक खोलकर किले को हमारे हवाले न किया तो हमारी जंगी तोपें किले की ईंट-से-ईंट बजा देंगी।

चेन्नम्मा : (उत्साह से) ऐसी गीदड़-भभकियाँ हमने बहुत सुनी हैं। इससे चेन्नम्मा भयभीत नहीं होने वाली। लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ। हमारी तोपें अभी गूँगी नहीं हुई हैं। उनमें भी आग उगलने की शक्ति है।

(लड़ाई शुरू हो जाती है। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगती है। तोपों से गोले छूटते हैं। तभी सहसा रानी के अचूक निशाने से थेकरे गिरकर स्वर्ग सिधार जाता है। रायण्णा फाटक खोलकर थेकरे का सिर उतार लाता है और किले के बुर्ज़ पर लटका देता है। कम्पनी की सेना भाग खड़ी होती है।)

रायण्णा : वीर सैनिको! हमें अब भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। शत्रु दुम दबाकर भाग गया है। हमने उन्हें पराजित कर दिया है।

चेन्नम्मा : (जोश से) मेरे बहादुर सैनिको! अंग्रेज हमारा बाल भी बाँका नहीं कर सकते। परन्तु उनका दूसरा आक्रमण शीघ्र होगा। उसका मुकाबला करने के लिए तैयार रहो। शत्रु पीठ दिखाकर भाग गया है, किन्तु वह चुप नहीं बैठेगा।

(चेन्नप्पा का अनुमान सही निकला। कुछ दिन बाद चैपलिन ने दो हज़ार सिपाहियों के साथ किले को चारों ओर से घेर लिया। इस बार उसने किले को लगभग भूनकर रख दिया, किन्तु किले पर अधिकार नहीं कर सका। उसके साथ मल्लप्पा भी था।)

चैपलिन : मल्लप्पा, किले में जाने का गुप्ट रास्टा टुमे मालूम हैय। जल्दी बताओ। हम वहीं पर हमला करेगा। टुम हमारा फ्रेंड हैय। हम टुमको बहुत इनाम देगा।

(स्वार्थी मल्लप्पा उन्हें गुप्त रास्ता बताता है। चैपलिन लगातार तोपों से वहाँ हमला शुरू कर देता है। रानी बहुत प्रयत्न करती है। उसके बहुत सारे सैनिक उसी एक जगह लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। अंग्रेज़ सैनिक किले में प्रवेश कर जाते हैं। चैपलिन रानी को कैद कर लेता है।)

चैपलिन : (सिपाही से) इसे कोठरी में बंद कर दो। यह बहुत खटरनाक स्ट्री है। इसने हमारा बहुत नुकसान किया है। मल्लप्पा! तुम भी सिपाही के साथ जाओ। हम अभी किले का बंदोबस्ट करके आटा है।

मल्लप्पा : (हँसकर) अच्छा साहब! हमारे इनाम का ख्याल रखना। अगर हम आपको गुप्त रास्ता नहीं बताता, तो विजय प्राप्त करना कठिन था।

चैपलिन : ओह! मल्लप्पा! टुम चिंटा मट करो। हम अभी आटा है। टुमको बहुट इनाम डेगा। (चैपलिन आगे जाता है। मल्लप्पा भी रानी से चलने के लिए कहता है। रानी को बहुत गुस्सा आता है।)

चेन्नम्मा : मेरे आगे से हट जा, धूर्त! मैं तेरा मुँह तक नहीं देखना चाहती। तुझ जैसे देशद्रोहियों ने ही भारत माता को दासता की बेड़ियों में जकड़ा है। वह तुम पर आठ-आठ आँसू बहा रही है। तुम्हें लज्जा नहीं आती! तुझ जैसे गद्दार को देश कभी भी क्षमा नहीं करेगा।

मल्लप्पा : मुझे इसकी परवाह नहीं। मुझे तो अलग जागीर चाहिए, जिस पर मैं शासन कर सकूँ। हो सकता है, कम्पनी सरकार मुझे कित्तूर का राज्य ही सौंप दे।

चेन्नम्मा : (क्रोध से) चुप रह नरक के कीड़े। यदि कित्तूर का नाम अपनी जिह्वा पर लाया तो जिह्वा खींच लूँगी। और ले तुझे जागीर चाहिए न, वह मैं तुझे देती हूँ। (फुरती से कटार निकालकर मल्लप्पा के सीने में भोंक देती है। मल्लप्पा वहीं गिरकर मर जाता है। सैनिक तुरंत चैन्नम्मा को पकड़ लेते हैं।) ले अब मिल गई न तुझे जागीर। अब अंग्रेज़ चाहे मुझे फाँसी चढ़ा दें या मेरी बोटी-बोटी अलग कर दें, मैं शांति से मर सकूँगी।

(परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

कम्पनी=अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी। **प्रतीक्षा**=इन्तजार, बाट जोहना। **ससम्मान**=आदर के साथ। **फरमान**=आदेश। **बेहतर**=अच्छा। **सरासर**=निश्चित रूप से, पूर्णतया, बिलकुल। **दुर्बल**=कमजोर। **प्रलय**=सर्वनाश का समय। **कुटिल**=दुष्टतापूर्ण, उलझी हुई। **फैसला**=निर्णय। **चुनौती**=चेतावनी। **हस्तक्षेप**=दूसरों की बात में रोक लगाना, बीच में बोलना। **बर्दाश्त**=सहन। **तत्पर**=तैयार, उद्यत। **अंजाम**=नतीजा, परिणाम। **मुकाबला**=सामना। **अनुमान**=अंदाज। **गद्दार**=देशद्रोही।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- सेना – माता
- तोप – जल
- भारत – नायक
- सरोवर – बारूद

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- शत्रु..... दिखाकर भाग गया है। (पीठ/पेट)
- ऐसी ..... हमने बहुत सुनी हैं। (गीदड़ भभकियाँ/सिंह की दहाड़ें)
- अंग्रेज़ों को चुनौती देना ..... हाथ डालना है। (साँप की बाँबी में/चूहे के बिल में)
- लालच में आदमी कितना अंधा और नीच बन जाता है, तुम इसके ..... उदाहरण हो। (जीते-जागते/मृतप्राय:)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) 'कम्पनी सरकार की भी तो जय कहिए।' यह किसने किससे कहा?

(ख) लालच आने पर आदमी में क्या परिवर्तन हो जाते हैं?

(ग) समय आने पर नारी क्या कर सकती है?

(घ) नारी की शक्ति के बारे में चेन्नम्मा ने मल्लप्पा से क्या कहा?

(ङ) दास बनकर जीवन बिताने से किस प्रकार का जीवन जीना अच्छा है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) चेन्नम्मा ने सरकार के फरमान का उत्तर किन शब्दों में दिया?

(ख) यदि मल्लप्पा जैसे भेड़िए शत्रु से मिल जाएँ तो क्या होगा?

(ग) ''अंग्रेज़ों को चुनौती देना 'साँप की बाँबी' में हाथ डालना है'', का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) मल्लप्पा का अंत किस प्रकार हुआ?

(ङ) लड़ाई की तैयारी के बारे में रायण्णा ने चेन्नम्मा को क्या बताया?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

आज्ञा, अन्यथा, आँसू, फाँसी, समाप्त

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

कपनी, नीती, देशदोही, पारंभ, शक्ती

6. निम्नलिखित मुहावरों/कहावतों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

दो-दो हाथ करना, मिट्टी में मिलाना, दाँत खट्टे करना, जिस थाली में खाना उसी में छेद करना।

उपर्युक्त मुहावरों के अलावा पाठ में आए अन्य मुहावरें छाँटकर लिखिए।

ध्यान से पढ़िए और समझिए

''पहले की आज से बात है लगभग ढाई हज़ार वर्ष। एक थोड़ी दूर थी पाठशाला तट से गंगा। महर्षि थे, ध्रुवनारायण आचार्य पाठशाला के इस।''

इन पंक्तियों को पढ़ने से इनका अर्थ समझने में कठिनाई होती है। अर्थ स्पष्ट हो सके इसके लिए हमें पंक्तियों को निम्नलिखित प्रकार से लिखना होगा।

''आज से लगभग ढ़ाई हजार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। इस पाठशाला के आचार्य ध्रुवनारायण थे।''

उपर्युक्त वाक्यों के पढ़ने से लेखक या वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट होता है। बात समझ में आ जाती है।

शब्दों के उस क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं, जिससे अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट हो जाए।

यह भी जानिए

जो वाक्य भाव और अर्थ को स्पष्ट करने में जितना सफल होता है, वह उतना ही गुण सम्पन्न होता है। सरल और सुन्दर वाक्य में निम्नलिखित गुण होना चाहिए—

आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति या सन्निधि, पदक्रम, अन्विति तथा सार्थकता

इन गुणों को इस तालिका के आधार पर समझ सकते हैं।

वाक्य के गुण दर्शाने हेतु तालिका

क्र.	वाक्य के गुण	गुण रहित वाक्य	वाक्य में कमी/दोष	गुण सहित वाक्य
1.	आकांक्षा	– मुकुल ने पीया।	जानने की इच्छा	मुकुल ने दूध पीया।
2.	योग्यता	प्रसंग आग से खेलता है।	बेमेल संयोग	प्रसंग गेंद से खेलता है।
3.	आसत्ति या सन्निधि (समीपता)	रानी...प्रति...दिन... पुस्तक पढ़ती है।	शब्दों में अधिक अंतर रखना।	रानी प्रतिदिन पुस्तक पढ़ती है।
4.	पदक्रम	पाठशाला गोलू जाता है।	क्रम गलत।	गोलू पाठशाला जाता है।
5.	अन्विति	सौम्या पत्र लिखता है।	क्रिया, कर्ता के लिंग में बेमेल संबंध।	सौम्या पत्र लिखती है।
6.	सार्थकता	मैं प्रतिदिन रोजाना घूमने जाता हूँ।	समान अर्थ वाले शब्दों की व्यर्थ पुनरावृत्ति।	मैं प्रतिदिन घूमने जाता हूँ।

7. नीचे लिखे वाक्यों में गुणों का अभाव है। जिस गुण का अभाव हो उसे वाक्य के सम्मुख दिए गए रिक्त कोष्ठक में लिखिए —

(क) दिन में काम करते हैं। (.....)

(ख) किसान लाठी से खेत जोतता है। (.....)

(ग) पुस्तक पढ़ी सौरभ ने। (.....)

(घ) बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती हैं। (.....)

(ङ) शुभम शाला से वापस लौटता है। (.....)

अब करने की बारी

- स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक नारियों ने अंग्रेज़ों से संघर्ष किया, उनकी सूची बनाइए।
- देशप्रेम की कविताओं को याद कीजिए और स्वतन्त्रता दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता में सुनाइए।
- वीरांगनाओं के चित्र संग्रह कीजिए।
- प्रस्तुत पाठ को कहानी में परिवर्तित कर लिखिए।

❑❑